Drug Preparation of Dispensing

(वितरण हेतु औषधि तैयार करना)

आयुर्वेद में औषधि स्वरूप

- स्थावर
  - रस–भस्म
- जंगम
  - वनौषधि

वितरण हेतु औषधियों का स्वरूप

- रस–भस्म
- वटी
- चूर्ण
- अवलेह
- आसव–अरिष्ट

रस–भस्म, वटी, गुग्गुलू की मात्रा

आयुर्वेद मे रस–भस्म की मात्रा एक रति से दो रति यानि 125mg से 250mg तक उल्लेख है किन्तु रोगी के बलाबल के अनुसार औषधि मात्रा घटाई अथवा बढाई भी जा सकती है। वर्तमान में रस औषधियां वटी (Tablet) में भी उपलब्ध हैं। उनकी मात्रा उक्त रसभस्मों के अनुसार ही होती है। रसभस्मों को अन्य चूर्णों में मिलाकर देने से अधिक लाभ होता है।

गुग्गुलू–

गुग्गुलू भी वटी के रूप में आते हैं। उन्हें भी पीसकर प्रयोग करने से अधिक लाभ होता है।

चूर्ण

आयुर्वेद मे चूर्ण की मात्रा दो ग्राम से पांच ग्राम तक उल्लेख है किन्तु रोगी के बलाबल के अनुसार औषधि मात्रा घटाई अथवा बढाई भी जा सकती है।

आसव–अरिष्ट / क्वाथ

आयुर्वेद में आसव–अरिष्ट अथवा क्वाथ काढ़ा की मात्रा पांच से बीस ml तक उल्लेख है किन्तु रोगी के बलाबल के अनुसार मात्रा घटाई अथवा बढाई भी जा सकती है।

क्वाथ निर्माण की विधि– औषधि द्रव्य 01 भाग, जल 04 से 08 भाग रखकर पकाने के उपरान्त जब 02 से 04 भाग शेष रह जाय तब छानकर उक्त आसव एवं अरिष्ठ / क्वाथ की मात्रा के अनुसार प्रयोग करना चाहिए।

वितरण हेतु औषधियों का रख–रखाव

उक्त वर्णित क्रमानुसार औषधियों का रख–रखाव एवं औषधि–पंजिका (स्टॉक बुक) में भी इसी क्रमानुसार प्रविष्टि अंकित करनी चाहिए, कि पहले रस–भस्म, वटी, चूर्ण, अवलेह, आसव अरिष्ट/क्वाथ तथा उसके पश्चात अन्य शोधित द्रव्य औषधियों को वितरण हेतु रखना चाहिए और उसी क्रम में स्टाक बुक में प्रविष्टि रखनी चाहिए।

औषधियों को एल्फाबेटिक (वर्णक्रमानुसार) वितरण हेतु रखना चाहिए तथा उसी क्रमानुसार औषधि पंजिका में अंकित करना चाहिए एवं औषधियां बटर पेपर अथवा बन्द सील डिब्बियों में वितरित करनी चाहिए। जिससे नमी एवं फफूंदी से बचा जा सके।

औषधियों को बन्द आलमारियों में सुव्यवस्थित रखना चाहिए, तथा किस अलमारी में कौन–कौन सी औषधियां रखी गयी हैं, अलमारी के बाहर से सूची अंकित होनी चाहिए।

उक्त शास्त्रीय औषधियों के अतिरिक्त वर्तमान में हमारे चिकित्सालयों में पेटेण्ट औषधियां भी प्राप्त होती हैं, उन्हें भी वर्णक्रमानुसार– कैप्सूल, टैबलेट, पाउडर, सीरप के क्रम में रखना चाहिए तथा इसी क्रम में पेटेण्ट औषधियों का पृथक रजिस्ट्रर रखना चाहिए जिसमें उक्त क्रमानुसार औषधियों की प्रविष्टि अंकित की गई हो, जिससे औषधियां निकालने एवं वितरण करने में आसानी रहे एवं कम समय में कार्य सम्पादित हो सके।

फार्मेसिस्टों के पास औषधि भण्डार का दायित्व होता है इसलिए औषधियों को वितरण हेतु सुव्यवस्थित रखना चाहिए तथा साफ डिब्बों, शीशीयों में लेबल सहित औषधियां रखनी चाहिए तथा औषधि पंजिका भी स्पष्ट रूप से भरी जानी चाहिए। किसी भी प्रकार का व्हाइटनर का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कहीं पर यदि त्रुटि हो तो उसे काट कर पुनः प्रविष्टि अंकित करनी चाहिए एवं चिकित्साधिकारी/इन्चार्ज से कटिंग सत्यापित करानी चाहिए। जिससे पारदर्शिता बनी रहे। साथ ही फार्मेसिस्टों को दैनिक मांग–पत्र बनाना चाहिए जिसमें दैनिक निकाली जाने वाली औषधियों का विवरण हो जिसको निम्नवत बनाना चाहिए–

दैनिक औषधि मांग–पत्र पंजिका

क्र.सं.	दिनांक	औषधि / वस्तु का नाम	मांग मात्रा	भण्डार में शेष मात्रा	स्टाक बुक पृष्ठ सं0	हस्ता0 फार्मेसिस्ट	हस्ता0 चिकित्साधिकारी

उक्तानुसार औषधि पंजिका एवं दैनिक औषधि मांग–पत्र पंजिका स्वच्छ एवं स्पष्ट रूप से रखनी चाहिए तथा निकाली गई औषधियों का समय–समय पर चिकित्साधिकारी / इन्चार्ज से सत्यापन कराना चाहिए।

द्वारा– बी0एम0 भट्ट,
वरिष्ठ फार्मेसिस्ट, रा0आयु0चि0, मोथरोवाला, देहरादून
दिनांक– 22 जनवरी 2016